रात्रीक्लास ओमशांति 16.11.67

.....बाप पहले2 बच्चों से पूछते हैं आत्म अभिमानी होकर बैठे हो?बाप तो सावधान करते हैं..... .....कोई नहीं रहते ;परंतु पूछने से सत्य नहीं बतावेंगे। सच्च जानते ही नहीं हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। रात–दिन सुनते हैं फिर बुद्धि में नहीं बैठता। बादशाही में तो आवेंगे ;परंतु.....बनेंगे। जानते हैं हमारा कोई पद है नहीं। इसलिए बाबा कहते हैं बाहर मे रह कर सीखेंगे तो अच्छा (पद) पावेंगे। बाप को भूल बहुत जाते हैं। इसलिए बाप कहते हैं मैं जो हूं ,जैसा हूं विरला कोई जानते हैं। फिर.....पीछे में कहेंगे बाबा हम भूल गए क्षमा करना। अब क्षमा की बात नहीं। जितना जो करते हैं उतना वह (पाते) हैं। उन्नति अपनी करनी है। इतना जोर से नशा होना चाहिए। बाप, बाप है ,टीचर है ,गुरू है। वह हमको पढ़ाते हैं। तो कितना पढ़ाई पर अटैन्शन देना चाहिए ;परंतु पूरा अटैंशन देते नहीं। जैसे कि कुछ समझते ही नहीं हैं। बच्चे समझ कर आते हैं कि हम किसके पास जाते हैं। कापारी नशा चाहिए। बहुत ही .....और उमंग में रहना चाहिए। बच्चे जानते हैं इतनी सेवा करने वाला बाप के सिवाय और कोई होता नहीं। ये एक तीनों रूप में सेवा करते हैं। कितना उंचा ले जाते हैं। तो बच्चों को कितना पढ़ाई में ध्यान ....देना चाहिए। नहीं तो बहुत घाटा पड़ जायेगा। अपना ही दिवाला निकाल देते। अच्छी रीत पढ़े तो कितना उंच पद पाये। बाप ने समझाया है आंखें बड़ा धोखा देने वाली हैं। गुस्से में आकर आंखें निकाल देते हैं। वो तो सूरदास की कहानी है। है इसी समय की बात। आंखें बहुत धोखेबाज हैं। इसमें बड़ी मेहनत चाहिए। इनको वश में करने के लिए बड़ी मेहनत चाहिए। डरपोक भी ना होना चाहिए। देखना है आंखें धोखा तो नहीं देती हैं। मेहनत है। कहना सहज है। <u>रात्रीक्लास 17.11.67</u>– रास्ता किसको बताना बहुत सहज है। सिर्फ कोई2 को लज्जा आती है। समझाना तो सहज है कि पतित–पावन बाबा है। इस समय दुनियां पतित और तमोप्रधान बनी है। .....किसी को भी समझाओ तो कहो कि यह तमोप्रधान दुनियां है। आत्मा भी तमोप्रधान है और शरीर भी तमोप्रधान है। सतयुग में आत्मा और शरीर दोनों सतोप्रधान होते हैं। है कॉमन ;परंतु कोई की भी बुद्धि में ब्ह्ता नहीं है। कई अच्छा2 भी कहते हैं। जयपुर में कितनी प्रजा बनी होगी। प्रजा बहुत बनती है। उलहना नहीं देंगे कि हमको पता नहीं पड़ा। सब किसम के परचे निकालते रहो। बेहद के बाप से आकर नई दुनियां का वर्सा लो। तो सब आवेंगे। परचे निकालते रहना चाहिए। विश्व की बादशाही मिलती है। यह भी निश्चय है कि राजधानी स्थापन हो रही है। धर्म तो स्थापन होगा ही। इसमें बच्चों का..... दिलशिकस्त न होनी चाहिए। जो सर्विस पर हैं 50/60हजार प्रजा जरूर बना ली होगी। विवेक भी ऐसा कहता है ना। बाप आया हुआ है। वो पतित–पावन है। कहते हैं कि मुझे याद करो। बहुत थोड़े हैं कि जो चार्ट आदि रखते हैं। नम्बरवार हैं। कितनी गरीब मातायें भी आती हैं। ड्रामाप्लान अनुसार स्थापना होती रहती है। पुरुषार्थ किये बिना कोई रह नहीं सकेंगे। ड्रामा जरूर पुरुषार्थ करवायेगी। बच्चे तो सर्विस में लगे ही रहते हैं। हर एक समझ सकते हैं कि हमने कितनों को रास्ता बताया.....। तो सहज में ही समझने की बातें हैं। जो निश्चय बुद्धि हैं उनको ही समझ में आता है। उनके लिए कहा है कि अतिइन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। सतयुग में तो गोप–गोपियां होती नहीं हैं। यहां ही तुम्हारा रमणीक नाम रखा हुआ है। अभी तुम समझते हो कि हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। तो है ही स्वर्ग का रचता , तो हम बच्चों को जरूर वो ही वर्सा प्राप्त होना चाहिए। अब बच्चों को .....जाता है कि जानते हो कि हम भाई–बहनों को ब्रह्मा द्वारा वर्सा जरूर मिलना है। कल्प2 मिलता है,मिलता ही रहेगा। अनन्य बच्चे तो घर बैठे हुए भी समझते हैं कि हम बाप के बने हैं। बाप ने .....है कि शरीर का निर्वाह भी करना है तो कमल के फूल समान भी बनना है। यहां पर बच्चे आते हैं समझते हैं कि हम शिवबाबा के पास जाते हैं। पत्र भी लिखते हैं तो शिवबाबा केअर ऑफ ब्रह्मा बाबा। जनावरों को भी हकल की जाती है ना। यह यात्रा बहुत मीठी घर बैठे ही करने की है। आधा वो यात्रायें पूरी की अब यह यात्रा करते हो। इस यात्रा से हमको अमरलोक में .....

(मुरली अधूरी है)